कुमारी चम्पा
महाराजा कॉलेज
हिन्दी विभाग

M.A.
SEM I Paper I

प्रश्न- भाषा की परिभाषा देते हुए भाषा और बोली में अंतर बताएँ।

उत्तर- भाषा शब्द संस्कृत के 'भाष' धातु से बनी है, जिसका अर्थ है, बोलना करना या प्रकट करना। अर्थात भाषा वह है जिसे बोला जाए कहा जाए अथवा जिससे विचार स्पष्ट रूप से प्रकट किया जाए। बोलते तो संसार के प्रायः सभी प्राणी हैं। गाय, बन्दर, बिल्ली, मोर, मुर्गी सभी परस्पर विचारों के आदान प्रदान के लिए किसी न किसी प्रकार की भाषा का प्रयोग करते हैं। परन्तु उनके विचार विनिमय को भाषा नहीं कह सकते। उनकी भाषा केवल सांकेतिक होती है। मानव की भाषा का रूप केवल सांकेतिक न होकर लिखित भी है। वस्तुतः विचार विनिमय के लिखित रूप को (रूढ़ सांकेतिक प्रतीकों) ही भाषा कहा जाता है। इस प्रकार, मनुष्य के भाव के लिए ध्वनि प्रतीकमय साधन को 'भाषा' कहते हैं। अथवा भाषा मानवमुख से उच्चरित ~~यादृच्छिक~~ यादृच्छिक, रूढ़ ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसके माध्यम से एक समाज विशेष के लोग परस्पर अपने विचारों का आदान प्रदान करते हैं।

भाषा और बोली में अंतर — भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से भाषा और बोली में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होता। भाषिक संरचना और व्याकरणिक गठन की दृष्टि से दोनों समान हैं। भाषा वास्तव में बोली का ही विकसित रूप है। भाषा का प्रयोग क्षेत्र व्यापक है जबकि बोली एक सीमित क्षेत्र के अंतर्गत ही होता है। एक व्यापक भाषा क्षेत्र के अंतर्गत कई बोलियाँ होती हैं। अलग-अलग जातियों द्वारा भिन्न भिन्न स्थानों में कुछ विभेदक रूप के साथ-साथ भाषा का प्रयोग होता है। स्थान और समाज की भेदकता

से भाषा के इसी रूप को बोली कहा जाता है। इसलिए भाषा और बोली के बीच विभेदक रेखा खींचना कठिन है। भाषा और बोली शास्त्रीय विवेचन के लिए दो अलग नाम हैं।

"इस संबंध में 'एडवर्ड सपीर' कहते हैं कि 'भाषा विद' के लिए बोली और भाषा में कोई अंतर नहीं है।" एल० एच० ग्रे के अनुसार "बोलियों या भाषाओं में विभाजक रेखा खींचना असंभव है। अपने अपने सीमांतों पर ये एक दूसरे से अदृश्य रूप में घुली-मिली रहती हैं।" मोरियो का विचार है कि "भाषा और बोली में कोई तात्विक अंतर नहीं है। भाषा अपने मूल रूप में एक बोली ही होती है, किसी विशेष कारण से जब बोली प्रमुखता प्राप्त कर लेती है, तब वही भाषा बन जाती है।

उपर्युक्त विद्वानों के विचारों से यह स्पष्ट होता है कि भाषा और बोली में कोई तात्विक अंतर नहीं होता है। भाषा का क्षेत्र व्यापक और बोली का क्षेत्र सीमित होता है। एक भाषा में कई बोलियाँ होती हैं। इन बोलियों में क्षेत्रीय अंतर होने पर भी बोधगम्यता वर्तमान रहती है। विभिन्न भाषाओं में यह बोधगम्यता नहीं होती। जैसे- आप क्या करते हैं? को मगही में कहते हैं- 'तु कौची कर हो' और भोजपुरी वाले कहते हैं- 'रौआ की करअतानि'। दोनों बोलियों वाले एक दूसरे की बोली समझ लेते हैं। जबकि दो भाषाओं वाले एक दूसरे की भाषा नहीं समझते हैं। जैसे - मुझे पत्र। Patra. को हिन्दी, संस्कृत, अरबी, फारसी वाले नहीं समझ सकते हैं।

भाषा और बोली में इतनी समानता के बावजूद निम्नांकित अंतर है।

(1) ~~[illegible]~~ तत्व - भाषा और बोली के भाषा तत्व

समान होते हैं। ध्वनि, शब्द, पद, वाक्य तथा अर्थ की समानता के बावजूद भाषा और बोली में इसी स्तर पर कुछ असमानता भी होती है। यह भाषा और बोली की भेदकता है। इसके बावजूद बोली के भाषा तत्व भाषा में प्रयोग में आते हैं। तथा भाषा के तत्व बोली में भी ग्रहण किए जाते हैं। बोलियों से पृथक भाषा कोई चीज नहीं होती।

(2) विचार विनिमय — क्षेत्र सीमित होने के कारण बोली में विचार विनिमय की सघनता मिलती है। जबकि भाषा का क्षेत्र विस्तृत होने से वह सघनता नहीं होती

(3) विस्तार क्षेत्र - भाषा और बोली का महत्व पूर्ण विभेदक तत्व प्रयोग क्षेत्र होता है। भाषा व्यापक स्तर पर विचार अभिव्यंजना की आधार होती है। जबकि बोली का व्यापक क्षेत्र में प्रयोग नहीं होता। प्रकृति और प्रकार्यता की दृष्टि से एक होते हुए भी क्षेत्र विस्तार की दृष्टि से दोनों भिन्न हैं। हिन्दी क्षेत्र उसके भाषा समुदाय का क्षेत्र है। ब्रज अवधी, भोजपुरी इत्यादि बोलियाँ जिनका विस्तार सीमित है।

(4) संपर्क की मात्रा - भाषा का संपर्क क्षेत्र व्यापक होता है। इस विस्तृत क्षेत्र के लोग भाषा के माध्यम से विचार विनिमय करते हैं। बोली का संपर्क क्षेत्र सीमित होता है। सम्पर्क क्षेत्र का आधार भाषा और बोली के स्वरूप को निर्धारित करता है। बोली की व्यापकता सीमित क्षेत्र तक होती है। जबकि भाषा की आवश्यकता विस्तृत है। हिंदी भाषा का संपर्क क्षेत्र संपूर्ण भारत है जबकि अवधी, भोजपुरी आदि का संपर्क क्षेत्र सीमित है।

(5) व्याकरणिक दृष्टि - भाषा व्याकरणिक नियमों से परिचालित होती है। व्याकरणिक संस्कार और प्रयोग की बहुलता के कारण भाषा परिनिष्ठित

होती है जबकि बोली में व्याकरणिक नियमों का पालन कठोरता से नहीं होता है। भाषा की तुलना में बोली कम परिनिष्ठित होती है।

(6) साहित्य निर्माण – भाषा में विपुल साहित्य रचना होती है। बोलियों में आंचलिक साहित्य का ही निर्माण होता है। संख्या और गुणवत्ता की दृष्टि से भाषा का साहित्य बोली की अपेक्षा अधिक होती है।

उपर्युक्त संपूर्ण विश्लेषण को देखने पर यह बात स्पष्ट होती है कि भाषा और बोली में कोई तात्विक अंतर नहीं होता अपितु, रूपगत अंतर देखे जा सकते हैं।